236
P
814
H
Microfilm

2011

891.431
R188S

1329
1971

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930

॥ वन्देमातरम् ॥

स्वराज्य की हाय

Swarajya ki Haya

सर्वाधिकार स्वरक्षित

प्रेम प्रिंटिंग प्रेस कानपुर

लेखक प्रकाशकः—

रामलाल छेदीलाल राठौर,
सदर बाजार तेलियाना कानपुर।

मूल्य)॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 814
Date 22.1.2.71
GOVT. OF INDIA

॥ वन्देमातरम ॥

स्वराज्य की हाय

॥ गजल ॥

शानों शौकत में गांधी का रुतवा जबर है।
चारसू जिसका चरचा अजब शेरे नर है॥
माहताव आस्मां पर निकलता है जैसे।
हिन्द में इस तरह गांधी मिस्ले कमर है॥
हिन्द वालों के हक में है मुनफैद चर्खा।
दुश्मनो के लिये बस समझलो कहेर है॥
ऐ इन्गलैन्ड वालो जो छेड़ोगे ज्यादा।
हमे हिन्द काला न उतरो जहर है॥
लिया देख अब तक सबर करते करते।

कहां तक करे बे सबर दिल सबर है ॥
जिस तरह हम हैं रोये समझ लीजियेगा ॥
तुम्हे भी रुलायेगे जब हो सबर है ।
न घबरा स्वराज्य अब गनी जायगा मिल ।
रही गरचे ईश्वर की सीधी नजर हैं ॥

॥ गजल सोहनी ॥

जोके ज़ुल्म करते हैं या खुदा,
नाम उनका जग से मिटादे तू ।
बेकसों की इतनी है ये दुआ,
कि स्वाराज्य हमको दिला देतू ॥
बहुत तंग हैं हम आ चुके,
गमो सद में लाखों उठा चुके ।

कहूं क्या है आज़ुरदा दिली,
जरा गुंचा मेरा खिलादे तू ॥
शाह जिसको चाहे तू कर सके,
शाहन्शाह को चाहे गदा करे ।
मजा जब है हिन्दुस्तान को,
शहन्शाह करके दिखादे तू ॥
यही कह रहे हम हैं रो रो कर,
आशकों से दामन करके तर ।
हैं जो कि दुश्मने जां हिन्द के,
उन्हे खाको खूं में मिलां दे तू ।
जिन्हे हिन्द कहता है बासितम ।
दिये हैं उन्हो ने ये रंजो गम ॥
इन्हे बाग हिन्दुस्तान में से,
तबाह करके भगा दे तू ॥
बड़ी मेहरबानी हो या खुदा,

मेरी पूरी हो ये इल्तिजां,
कैद हिन्दियों को छुड़ा दे तू।
इन्हे कैद करके दिखादे तू।
गनी हिन्दू मुशलिम हो येक दिल,
कोई ना माने इनका अदल॥
कहो हक से इतना के या खुदा,
फते दुशमनो से दिलादे तू॥

गजल

यारो समर में शक्ति दिखाने चलो चलें।
अरि गण को हां लगाने ठिकाने चलो चलें॥
सुनता नहीं है अपना जो कोई हवाले ग़म।
आंहों से अर्श आज हिलाने चलो चलें॥
वे आवो दाना कर दिया जिन जालिमोंने हैफ।
उन जालिमों कि गोलियां खाने चलो चलें॥

जब डायरी भी देख चुके नादिरी के बाद ।
तब अपनी सलतनत को जमाने चलो चलें ॥
सदियां गुजर गई हैं हुये सर निगून हम ।
अब आसमां को सरपे उठाने चलो चलें ॥
है इमतिहान आज शहीदाने वतन का ।
गरदन को यार अपनी कटाने चलो चलें ॥
सुन सान पड़गया है चमन सारा बुलबुलो ।
मिल जुल के आज शोर मचाने चलो चलें ॥
अब तक हमारे सरपे जो डाला किये हैं खाक ।
उनके सरों पे धूल उड़ाने चलो चलें ॥
निर्बल को बली और विपिन को चमन बना ।
यश कीरति ख्यात नाम कमाने चलो चलें ॥
रूठेहुये हैं यार बहादुर बिला सबब ।
फिर भी है फर्ज उनको मनाने चलो चलें ॥

गजल

वो क़तीले तेग सितम हूं मैं,
कि फलक ने मुझको मिटादिया।
न निकलने पाई थी उफ तलक,
कि जल्द आके दबा दिया॥
पड़ी लाश लाश पे वे कफन,
न लहद मिली न किया दफन।
वो जो जां निसार थे हिन्द के,
तहे ख़ाक योंही दबा दिया॥
हमी हिंद पे थे मरे हुये,
हमी हिंद पे थे मिटे हुये।
बस हमी ने नाम पे हिंद के,
गला अपना योंहीं कटा दिया॥
जो जहां गिरा था पड़ा रहा,

जो जहां पड़ा न उठ सका ।
जो जग भी संभला तो बस वहीं,
उसे गोलियों से उड़ा दिया ॥
वो अरब अजम को दगासे बस ।
किया अपने कब्जे में आह अब ॥
वो जो सलतनत थी रसूल की ।
वां तसल्लुत अपना जमा दिया ॥
कहीं कत्ले आम किया गया ।
कहीं कोई सूली दिया गया ॥
गरज हिन्दियों को इसी तरह ।
सेतो खा को खूं में मिला दिया ॥
हुवा हिन्द सारा तबाह सब ।
ना अजीज बाकी है कोई अब ॥
कोई कैद कोई जला वतन ।
है किसी को दार चढ़ा दिया ॥